

डॉ. धर्मवीर भारती

डॉ. धर्मवीर भारती (जन्म- 25 दिसंबर, 1926 - 4 सितंबर, 1997) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे। वे साप्ताहिक पत्रिका 'धर्मयुग' के प्रधान संपादक भी रहे। डॉ. धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से समानित किया गया। उनका उपन्यास 'गुनाहों का देवता' हिन्दी साहित्य के इतिहास में सदाबहार माना जाता है।

जन्म

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के 'अंतर्रसुझा' नामक मोहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीवलाल वर्मा और माता का नाम श्रीमती चंद्रदेवी था।

भारती के पूर्वज पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शाहजहाँपुर जिले के 'खुदागंज' नामक कस्बे के जमीदार थे। पेढ़, पौधे, फूलों और जानवरों तथा पक्षियों से प्रेम बचपन से लेकर जीवन पर्यन्त रहा। संस्कार देते हुए बड़े लाड़ प्यार से माता पिता एवं दोनों बच्चों धर्मवीर और उनकी छोटी बहन वीरबला का पालन कर रहे थे अचानक उनकी माँ सख्त बीमार पड़ गयीं दो साल तक बीमारी चलती रही। बहुत खर्च हुआ और पिता पर कर्ज चढ़ गया। माँ की बीमारी और कर्ज से वे मन से टूट से गये और स्वयं भी बीमार पड़ गये। 1939 में उनकी मृत्यु हो गई। [1]

शिक्षा

इन्हीं दिनों पाद्य पुस्तकों के अलावा कविता पुस्तकें तथा अंग्रेजी उपन्यास पढ़ने का बेहद शक्त जागा। स्कूल खत्म होने की घर में बस्ता पटक कर वाचानालय में भाग जाते वहाँ देर शाम तक किताबें पढ़ते रहते। इंटरमीडियेट में पढ़ रहे थे कि गांधी जी के आद्वान पर पढ़ाई छोड़ दी और आजादी को लड़ाई में कूद पड़े। सुधार के प्रशंसक थे, बचपन से ही शस्त्रों के प्रति आकर्षण भी जाग उठा था सो हर समय हथियार साथ में लेकर चलने लगे और 'सशस्त्र क्रांतिकारी दल' में शामिल होने के सपने मन में संजोने लगे, पर अंत माता जी के समाजाने बुझाने के बाद एवं वर्ष का नुकसान करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई के लिए दायिता लिया। कोर्स की पढ़ाई के साथ अन्तर्वर्ष उनके शैली, कौटुम्ब, स्वर्णवर्ष, टॉनीसन, एमिली डिक्सन तथा अनेक फ्रांसीसी, जर्मन और स्पैन के कवियों के अंग्रेजी अनुवाद पढ़े, एमिल जेला, शारदचंद, गोर्की, क्युप्रिन, वालजाक, चार्ल्स डिकेन्स, विक्रांत हूयो, दॉस्टोयेव्की और तॉल्स्टोय के उपन्यास खबर ढूक कर पढ़े। [1]

लेखन और प्रकारिति

स्नातक, स्नातकोत्तर की पढ़ाई द्युशूलों के सहारे चल रही थी। उन्हीं दिनों कुछ समय श्री पदाकांत मालवीय के साथ 'अध्ययन' में काम किया, इताचन्द्र जोरी के साथ 'संगम' में काम किया। इन्हीं दोनों से उन्होंने 'पत्रकारिता' के गुर सुखी थे। कुछ समय तक 'दिनुस्तानी एकेडेमी' में भी काम किया। उन्हीं दिनों खुबकहनीयाँ भी लिखीं। 'मुर्मुं का गाँव' और 'सर्वां और पृथ्वी' नामक दो कहानी संग्रह छपे। छावन जीवन में भारती पर शरत चंद चूंचापाठ्यार, जयशंकर प्रसाद और ऑस्कर वालड का बहुत प्रभाव था। उन्हीं दिनों वे मानव लाल चतुरवेदी के सम्पर्क में आये और उन्हें पिता तुल्य मानने लगे। दादा मायवराला चतुरवेदी ने भारती को बहुत प्रस्तावित किया। [1]

उच्च शिक्षा और प्रगतिशील लेखक संघ

स्नातक में हिन्दी में सर्वाधिक अंक मिला। स्नातकोत्तर अंग्रेजी में करना चाहते थे पर इस मेडल के कारण डॉ. धर्मवीर वर्मा के कहने पर उन्होंने नाम लिखा लिया। स्नातकोत्तर की पढ़ाई करते समय 'मार्क्सवाद' और 'वृद्धांशु आधार' अध्ययन किया। 'प्रगतिशील लेखक संघ' के स्थानीय मंडी भी रहे सरत चंद चूंचापाठ्यार, साम्यवादीयों की प्रस्तर तथा देशद्रोही नीतियों से उनका महभग हुआ। तभी उन्होंने छोड़े भारतीय दर्शन, वेदान्त तथा बड़े विस्तार से व्यष्टि और संत साहित्य पढ़ा और भारतीय चिंतन की मानववादी परम्परा उनके चिंतन का मूल आधार बन गयी। [1]

शोध कार्य

डॉ. धर्मवीर वर्मा के निर्देशन में 'सिद्ध साहित्य' पर शोध कार्य चल रहा था। साथ ही साथ उस समय कई कवितायें लिखीं गईं जो बाद में 'हृदा लोहा' नामक पुस्तक के रूप में छपी। और उन्हीं दिनों 'गुनाहों का देवता' उपन्यास लिखा। साम्यवाद से मोहम्मद के बाद 'प्रगतिवाद: एक समीक्षा' नामक पुस्तक लिखी। कुछ अंतराल बाद ही 'सूरज का सातवां घोड़ा' जैसा अनोन्या उपन्यास भी लिखा। [1]

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक

शाशकावार्य पूरा करने के बाद वहीं विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हो गई। देखते ही देखते बहुत लोकप्रिय अध्यापक के रूप में उनकी प्रशंसा होने लगी। उसी दौरान 'नदी व्याधी थी' नामक 'एकांकी नाटक संग्रह' और 'चाँद और टटै हुए लोग' नाम से कहानी संग्रह छपे। 'ठेले पर दिमालय' नाम से लेखित रचनाओं को संग्रह छपा और शोध प्रबंध 'सिद्ध साहित्य' भी छप गया। अन्य नये दर्शनों को विश्वास अध्ययन किया। रिल्के की कविताओं, कामुक के लेख और नाटकों, ज्याँ पॉल सार्ट की रचनाओं और कार्ल मार्क्स की दार्शनिक रचनाओं में मन बहुत ढूबा। साथ ही साथ महाभारत, गीता, विनोदा और लोहिया के साहित्य की कोशिश की। भारतीय संत और सुफी काव्य और विशेष रूप से कबीर, जायरा और सूर को परिपक्व मन और पैनी हो चुकी समझ के साथ पुनः और समझा। [1]

मुर्डई और संपादन

इसी बीच 1954 में श्रीमती कौशला अश्व क्लाब द्वारा सुरुआई गई एक पंजाबी शरणार्थी लड़की 'कांता कोहली' से विवाह हो गया। संस्करणों के तीव्र वैष्णवी के कारण वह विवाह असफल रहा। बाद में संस्कृत विच्छेद हो गया। लेखन का अवास अब चल रहा था। 'सात गीत वर्षी', 'अंगुष्ठाना', 'कनुप्रिया' और 'देशांतर' प्रकाशित हो चुके थे। कुछ ही समय बाद बर्म्बई से एक प्रसाद 'धर्मयुग' के संग्रहालय का आवास।

पुनर्विवाह

धर्मवीर के संपादन में नये शितिज नजर आने लगे, साहित्यिक लेखन से इतर अपने देश के लिये बहुत कुछ बड़े काम किये जा सकते हैं यह समझ में आने लगा तो विश्वविद्यालय की जौकरी से त्यागप्रत देकर पूरे समाप्ति के साथ धर्मयुग के संपादन में शान्त कोदित किया। इस दौरान एक अत्यन्त शिक्षित और संप्रांत परिवार में जन्मी इलाहाबाद विश्वविद्यालय की शोध जाना जो कलकत्ता के 'शिक्षायतन कॉलेज' में हिन्दी की प्राध्यापक बन चुकी थी, उससे विवाह किया। वही 'पुष्पलता शमा' बाद में पुण्या भारती नाम से प्रधायात हुई। [1]

धर्मवीर का

मुख्य लेख: धर्मवीर धर्मवीर भारती के द्वारा संपादित 'धर्मयुग' पत्रकारिता की कसौटी बन चुका है। आज के पत्रकारिता के विद्यार्थी उनकी शैली को 'धर्मवीर भारती स्कूल ऑफ जर्नलिज़म' के नाम से जानते हैं। संस्कृतिक, सामाजिक, अधिक, वैज्ञानिक, खेलकूद, साहित्यिक सभी पक्षों को मिस्टर हुए राष्ट्रीय और

संपादकीय

नोएडा, (गौतमबुद्धनगर) रविवार 04 सितंबर 2022

सत्यं ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात्

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'



लेकर भरी सभा में उनके सामने गया। पूछता है वह सत्य? वह जीवित चिंडिया के गले पर हाथ का अंगूठा लगाये था, सोच कर गया था यदि उन्होंने बोला जीवित है तो अंगूठा से गला दबा कर मार सत को झाटा सावित कर देगा। और मृत बोला तो जीवित तो है ही है। सत्य सारी बात समझ गये। उन्होंने राजकुमार के प्रश्न के उत्तर में कहा- ह्यतुम् यह मृत चिंडिया हाथ में लिये हुए हो। राजकुमार ने तुरत मुट्ठी खोल कर चिंडिया उड़ा दी और कहा इन संत को कुछ ज्ञान नहीं हो पाता ये बूढ़े हैं, देखो थोड़ी बी बात भी नहीं बता सके, इनके विषय में व्यथ कहा जाता है कि ये मन की बात जान कर सच बता देते हैं संत ने कहा- राजकुमार!

मैं तुम्हारे मन की सारी बात जान गया था, यदि मैं जीवित हूं तो तुम उसे मार देते हैं और एक झूठ से यदि उस जीव की जान की रक्षा हो गई तो वह झूठ भी सत्य की ब्रेणी में आता है। इसलिए कहा है कि सत्य बोलें किन्तु प्रिय बोलें।

उत्तम सत्य आत्मा का एक गुण है। जैसे किसी प्रबन्धनावीटी आवरण पड़ा हो और वह हट जाये तो बास्तविक तस्वीर निकल आती है, वही सत्य है। जिसमें कोई, मिलावटी न हो, बनावटीन हो, कोई लाग-लपेट न हो वह सत्य है। ऋषि-मुनियों ने कहा है- ह्यासत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्-ह्य सत्य बोलो पर प्रिय बोलो, ऐसा सत्य भी मत बोलो जो अप्रिय हो अर्थात् जिससे किसी प्राणी का बात होता हो तो उसे मार देते हैं और एक विवर के लिए उस जीव की ब्रेणी में आता है। इसलिए कहा है कि सत्य बोलें किन्तु प्रिय बोलें।

जैन दर्शन में सत्य का अर्थ मात्र ज्योंगों की त्वं बोलने का नाम सत्य नहीं है, बल्कि हित-मित्र विवर के लिए होता है।

कभी न कभी उजागर हो ही जाता है। सत्य के विषय में निश्चिंत रहता है। हमें निश्चिंत व्यवहार में भी कहा जाता है- दाढ़ी-दूढ़ी न रहे, रुई लपेटी आग।

वह निश्चिंत रहता है।

राशि फल

आपको आपके आने वाले कल के बारे में एक सटीक झालक और ज्योतिषीय मार्गदर्शन प्रदान करता है।

आद्रपद शुक्ल पक्ष अष्टमी/नवमी, रविवार, 04 सितम्बर 2022 का दिन

400 पेंशन से निहत्ये युवक का नहीं हो रहा गुजारा, बीड़ीयो से लगाई न्याय की गुहार।

टैकिंक समाचार जागरण कटोरिया से धर्मेंद्र रत्न की रिपोर्ट

कि पेड़ पर चढ़े थे। तभी एक ग्यारह

हजार बिजली का तार पेड़ के संपर्क

कटोरिया प्रखंड के दोनों हाथों गांव

के पृष्ठ यादव 25 वर्ष बीड़ीयो से

लगाई न्याय की गुहार। दोनों हाथ

गंवार युवक के सरकारी सहायता

के नाम पर मात्र 400 सामाजिक

सुरक्षा पेंशन से भी गुहार

है। जिसमें युवक का गुजारा नहीं हो रहा है।

रोजगार के तलाश में शनिवार को

कटोरिया बीड़ीयो से न्याय की गुहार

लगाने पर खंड का गांव

के निराम लौट गए। युवक ने बताया कि

खाना-पीना से लेकर शैतालय के

परियाल नहीं हो रहा है।

युवक का गुजारा नहीं हो रहा है।

रोजगार के तलाश में शनिवार को

कटोरिया बीड़ीयो से न्याय की गुहार

लगाने पर खंड का गांव

के निराम लौट गए। युवक ने बताया कि

खाना-पीना से लेकर शैतालय के

परियाल नहीं हो रहा है।

युवक का गुजारा नहीं हो रहा है।

युवक ने बताया

पालीगंज में विधायक व अधिकारियों ने किया नहरों का सर्वेक्षण

पालीगंज/ शनिवार को प्रखण्ड व अनुमंडल क्षेत्र से गुजरनेवाली

नहरों का पालीगंज विधायक व अधिकारियों ने सर्वेक्षण किया।

जानकारी के अनुसार शनिवार को

पालीगंज अनुमंडल क्षेत्र से

गुजरनेवाली मुदिका नहर लाइन का

विस्तृत दौरा कर स्थानीय विधायक

डॉ. संदीप सौरभ के साथ नहर

विधायक के आला अधिकारियों ने

परियाल नहर के लिए जिसमें योग्य

नहर नहर परियोजना के मुदिका लाइन

और पालीगंज लाइन (क्रमशः 9

नवंबर और 10 नवंबर नहर) में फिल्हे

कई वर्ष पहले दोनों हाथे गवा

चुका हैं। भूखरीयों की स्थिति से

युवक गुजर रहे हैं। युवक ने बताया

पालीगंज में विधायक व अधिकारियों ने किया नहरों का सर्वेक्षण

पालीगंज/ शनिवार को प्रखण्ड व अनुमंडल क्षेत्र से गुजरनेवाली

नहरों का पालीगंज विधायक व अधिकारियों ने सर्वेक्षण किया।

जानकारी के अनुसार शनिवार को

पालीगंज अनुमंडल क्षेत्र से

गुजरनेवाली मुदिका के साथ नहर

विधायक के आला अधिकारियों ने

परियाल नहर परियोजना के मुदिका

लाइन के लिए जिसमें योग्य

नहरों में और साथीयों के संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचलाधिकारी प्रशांत शांखल्य के

अध्यक्षता की ओर भूमि संबंधित

मामले निपटारा के लेकर संबंधित

थाने जनता दरबार लागाया जा रहा

है। जिससे सुडाया थाना परियोजने में

थाना अध्यक्ष मनीषी कुमार

व अंचल

